Research Paper Education

Shiksha Ke Prasar Ke Liye Gair-sarkari Prayas

शिक्षा के प्रसार के लिए गैर–सरकारी प्रयास

Amit Kumar Research Scholar, Department of Pedagogical Sciences, Faculty of Education, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University), Agra 282 005 (UP), India

Dayal Sandhu Research Scholar, Department of Pedagogical Sciences, Faculty of Education, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University), Agra 282 005 (UP), India

ABSTRACT शिक्षा मानव प्रगति का मुख्य आधार हैं शिक्षा जहां हमें संस्कारित करके अच्छा इंसान बनने की दिशा देती है, वहीं आर्थिक एवं भौतिक विकास की सीढ़िया चढ़ने में भी सहायक होती है। सरकार के मुख्य लक्ष्य 'सबका साथ सबका विकास' की प्राप्ति में शिक्षा का अमूल्य योगदान हो सकता है। साक्षरता तथा शिक्षा को प्रोत्साहन देने के सरकारी प्रयास स्वतंत्रता के पश्चात् से ही निरंतर चल रहे हैं।

KEYWORDS :

प्रस्तावना

शिक्षा मानव प्रगति का मुख्य आधार हैं शिक्षा जहां हमें संस्कारित करके अच्छा इंसान बनने की दिशा देती है, वहीं आर्थिक एवं भौतिक विकास की सीढ़िया चढ़ने में भी सहायक होती है। सरकार के मुख्य लक्ष्य 'सबका साथ सबका विकास' की प्राप्ति में शिक्षा का अमूल्य योगदान हो सकता है। साक्षरता तथा शिक्षा को प्रोत्साहन देने के सरकारी प्रयास स्वतंत्रता के पश्चात् से ही निरंतर चल रहे हैं। सभी भारतीयों तक शिक्षा की ज्योति पहुंचाने के लिए शिक्षा संस्थाओं की संख्या बढ़ाने के साथ–साथ नई शिक्षा नीति तैयार की जा रही है। किंतु इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता कि अनेक प्रयासों के बाद भी साक्षरता दर संतोषजनक नहीं है। 2011 की जनगण ना के अनुसार देश में 65 प्रतिशत लोग साक्षर थे जिनमें पुरूषों की साक्षरता दर 75 प्रतिशत तथा महिलाओं की केवल 54 प्रतिशत थी। जाहिर है शिक्षा विशेषकर, महिला शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति चिंताजनक है। यह तो तब है जब केन्द्र और राज्य सरकारों के अलावा अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं तथा व्यक्ति भी शिक्षा प्रसार के यज्ञ में अपनी आहूति डाल रहे हैं। ये संस्थाएं और व्यक्ति अपने–अपने ढंग से जरूरतमंद वर्गों को शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध कराके उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ते रहे हैं ओर उनमें आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ते रहे हैं ओर उनमें आर्थिक स्वावलंबन लाकर देश के आर्थिक विकास को गति देने में सहायता कर रहे हैं। ऐसे ही कुछ कर्मठ संगठनों एवं व्यक्तियों के त्याग, लगन व परिश्रम की कहानियाँ हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं इस विवरण का एक सुखद पहलू यह है कि ज्ञान प्रसार के इस गैर–सरकारी अभियान में महिलाएं अग्रणी भूमिका निभा रहीं हैं।

कमालगंज में मधु का कमाल

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ओ' कार्यक्रम में लड़कियों को शिक्षित करने पर विशेष बल देने का आग्रह है। इसलिए स्वयंसेवी प्रयासों में भी लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता मिल रही है। हम जानते है कि गांवों, कस्बों और शहरों मे स्कूल खुल जाने के बा. वजूद बहुत सी लड़कियां विभिन्न कारणों से स्कूलों में नहीं जा पातीं या शिक्षा पूरी किए बिना ही स्कूल छोड़ देती हैं। उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के कमालगंज इलाके की लड़की मधु ने ऐसी ही लड़कियों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया है। वह न केवल लड़कियों को शिक्षित कर रही है बल्कि समाज मे बेटियों के साथ होने वाले भेदभाव पर भी चोट कर रही है। मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी मधु बचपन से ही पढ़ाई में निपुण थी उसने देखा कि पांचवीं कक्षा में उसके साथ 100 लड़कियां पढ़ती थीं लेकिन जबवह छठी में गई तो 30–40 लड़कियां ही रह गई। जबवह आठवीं में थी तो लड़कियों की संख्या 18 रह गई। जब उसने मैट्रिक की परीक्षा दी तो उसके साथ केवल 8 लड़कियां ही रह गई। यह देखकर उसने मनही मन संकल्प किया किवह इस प्रवृत्ति को दूर करेगी। उसने दसवीं पास करते ही अपनी बस्ती में मां दुर्गा शिक्षण संस्थान नाम से स्कूल खोला और साथ ही अपनी पढ़ाई जारी रखी। मधु की ख्याति आस–पास के गांवों में फैल गई ओर उसे आर्थिक सहायता मिलने लगी। उसने शादी–ब्याह नही किया और अपनी पढ़ाई तथा स्कूल का काम जारी रखा। अबवह पी0 एच0 डी0 कर रही हैं। इस बीच, 2003 में मां दुर्गा शिक्षण संस्थान को जूनियर हाई स्कूल, 2006 में हाई स्कूल तथा 2013 में इण्टर कॉलेज की मान्यता मिल गई। मधु के प्रयासों से वे लड़कियां शिक्षित हो रही हैं जो सामान्य स्कूलों में नहीं पढ़ पाई थीं।

सेवानिवृति के बाद समाजसेवा

मधु की तरह स्नेहलता भी शिक्षा प्रसार के माध्यम से समाज सेवा कर रही हैं। हरियाणा के गुड़गांव शहर में स्नेहलता हुड्डा गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा की सुविध ा उपलब्ध करा रही हैं। स्नेहलता दिल्ली में अध्यापिका के रूप में कार्यरत थीं। रिटायर होने के बाद उन्होंने घर में बैठने या ट्यूशन आदि के जरिए पैसा कमाने की बजाए सेवा का रास्ता चुना और 2005 में 'गौरव निकेतन' नाम से स्कूल खोल लिया। स्नेहलता हुड्डा ने स्वयं शहर के विभिन्न गली–मुहल्लों में घूम कर उन गरीब बच्चों की पहचान की, जिन्हें पढ़ाई–लिखाई की जरूरत थी और बच्चों के मां–बाप को उन्हें स्कूल भेजने को तैयार किया। फिर एक जगह की तलाश की और पेड़ के नीचे कक्षाएं लगाने लगीं। अब यह स्कूल एक टिन शेड में चल रहा है जिसमें झुग्गी–झा. `पड़ी कालोनियों के बच्चें को स्कूल ड्रेस, पुस्तकें आदि मुफ्त दी जा रही हैं और उन्हें सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल होने के अवसर भी दिए जाते हैं।

स्कूल पहुंचाने के लिए मुश्तैद 'टीम बालिका'

शिक्षा देने वालों का समाज के विकास में जितना महत्व है उतना ही महत्व बच्चों को स्कूल तक ले जाने और उन्हें स्कूलों में बनाए रखने का है। जैसा कि पहले बताया गया है, बहुत से मां–बाप अपने बच्चों विशेषकर लड़कियों को स्कूल नहीं भेजते। राजस्थान के पाली और जालौर जिनों में कुछ उत्साही महिलाओं ने 'टीम बालिका' नाम की संस्था बनाई है जिसका उद्देश्य लड़कियों को सरकारी स्कूलों में अच्छी शिक्षा दिलाना है। यह संस्था जहां एक ओर लड़कियों तथा उनके मां–बाप को बालिका शिक्षा के लिए प्रेरित करती है वहीं सरकारी स्कूलों के अधिकारियों तथा प्रिंसिपलों व शिक्षिकाओं को लड़कियों की शिक्षा पर पूरा ध्यान देने का दबाब बनाती है। टीम बालिका ने जब यह अद्भुत प्रयास शुरू किया था तो इसने 50 सरकारी स्कूलों में लड़कियों की शिक्षा का कार्य हाथ में लिया था किंतु धीर–धीरे इसका कार्यक्षेत्र बढ़ता गया और इस समय 500 सरकारी स्कूलों में लड़कियों को दाखिला दिलाने तथा उन्हें स्कूल छोड़ने से रोकने की दिशा में संस्था की कार्यकर्ता सक्रिय हैं।

सामाजिक कुरीतियों से लड़ता आई.पी.एस.

केरल के एक आई.पी.एस. अधिकारी पी. विजयन भी गरीब बच्चों को शिक्षित करने में लगे हैं। विजयन का अपना बचपन गरीबी में बीता था। उन्हें एक समय स्कूल की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी थी। लेकिन बाद में मेहनत और लगन से उन्होंने फिर सेपढ़ाई शुरू की और आई.पी.एस. अधिकारी बनने में कामयाब हुए। पुलिस मे वरिष्ठ पदों पर काम करते हुए उन्हें अनेक जरूरतमंद बच्चे मिले पर वे उनके लिए कुछ नहीं कर पाते थे। इसलिए उन्होंने कोजीकोड में 'नान्मा' संस्था बनाई। यह संस्था स्कूल में पढ़ाई जारी न रख पाने वाले बच्चों को पढ़ने–लिखने के अवसर देती है। इस समय 1,000 से अधिक गरीब बच्चे इस संस्था से मदद लेकर पढ़ाई कर रहे हैं। विजयन ने एक और दिशा में भी कदम बढ़ाया है। उन्होंने युवकों को सामाजिक कुरितियों से लड़ने का प्रशिक्षण देने के लिए स्टूडेंट्स पुलिस कैडेट प्रोजेक्ट नाम से अभिनव कार्यक्रम शुरू किया है।

मां की याद में शुरू की बेटियों की सेवा

महाराष्ट्र में पुणे की बेगम अशरफ मुल्ला ने अपने इलाके के मुस्लिम समुदाय की औरतों को साक्षर तथा सशक्त बनाने का बीड़ा उठाया है। बेगम अशरफ एक स्कूल में अध्यापिका थीं। सरकारी स्कूल में पढ़ाते हुए उन्हें घर–बार भी संभालना पड़ता था जिससे वह अपने समुदाय की औरतों की जिंदगी बदलने का अपना सपना पूरा करने के लिए समय नहीं निकाल पाती थीं। 1985 में अपनी मां की मृत्यु के बाद उनके मन में अपनी मां की याद मे कुछ करने की इच्छा बलवती हुई और उन्होंने गरीब और अनपढ़ मजदूरों की लड़कियों के लिए सिलाई स्कूल खोला। बाद में उन्होंने मुस्लिम समाज प्रबोधन संस्था का गठन किया और 1990 में एक प्राइमरी स्कूल शुरू कर दिया। तभी गांव के किसी नेक इंसान ने उनकी संस्था के लिए 3000 वर्ग फुट जमीन दान में दी।

इसके बाद अशरफी मुल्ला के नाम से पुकारी जाने वाली इस महिला के कदम और तेजी से बढ़ने लगे। उन्होंने 1993 में लड़कियों के लिए अनाथालय खोला जिसमें अब 100 से अधिक लड़कियों को सहारा मिला हुआ है। रिटायर होने के बाद बेगम अशरफ अपना पूरा समय सेवा कार्य में लगाने लगीं। एक और परिवार ने 2003 में उन्हें जमीन दान में दी जहां उन्होंने लड़कियों के लिए जूनियर कॉलेज खोल दिया।

इस समय उनकी 6 संस्थाएं चल रही हैं जहां लड़कियां शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने परिवार तथा समुदाय का जीवन बेहतर बना रही हैं।

खानाबदोश परिवारों को पढ़ाने में जुटी प्रोफेसर

महाराष्ट्र की ही एक अन्य महिला रजनी परांजपे भी बाल शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम कर रही हैं। ये स्वयं सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं और अपनी एक बाल मनोवैज्ञानिक मित्र बीना शेठ लश्करी के साथ मिल कर उन्होंने 1988 में मुबंई में खानाबदोश परिवारों के बच्चों को शिक्षित करने के लिए एक स्वयंसेवी संस्था 'डोर स्टेप स्कूल' का गठन किया। पुणे में विभिन्न स्थानों पर निर्माणाधीन इमारतों में काम करने वाले मजदूरों के बच्चों को 'डोर स्टेप स्कूल' में शिक्षा दी जाती है। मुंबई के स्लम क्षेत्र के बच्चों को भी शिक्षित किया जा रहा है। बाद में इन बच्चों को साम. ान्य स्कूलों में दाखिल कराया जाता है ताकि उपेक्षित बच्चे समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें। केवल 30 बच्चों से शुरू हुई इस संस्था की विभिन्न परियोजनाओं में इस समय कई हजार बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जाहिर है इस संस्था के बिना हर साल हजारों गरीब बच्चे शिक्षा के वरदान से वंचित रह जाते ।

पंजाब का शांति निकेतन

पंजाब के गुरदासपुर जिले के तुगलवाला गांव में चलने वाला बाबा आया सिंह रिया. ड़की कॉलेज अपने आप में एक अनूठी शिक्षा संस्था है। नाम इसका भले ही कॉलेज है लेकिन यहां पहली से लेकर एम.ए. तक की पढ़ाई हाती है। इस संस्था की विशेषता यह है कि यह गांव के लोगों द्वारा ही संचालित होता है। इसे 'पंजाब का शांति निकेतन' भी कहा जाता है। इस संस्था की शुरुआत बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हुई किंतु बाद में इसमें लड़कों को भी प्रवेश दिया जाने लगा। इस समय 3500 विद्यार्थी हैं जिनमें से 2500 लड़कियां हैं। केवल 34 लड़कियों को लेकर 1975 में शुरू हुए कॉलेज के संचालन का दायित्व मुख्य रूप से लड़कियों के कंध ों पर रहता है। यहां पढ़ने वाले बच्चों सेबहुत मामूली फीस ली जाती है। इसके अनूठेपन का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि कॉलेज में प्रशासन या शिक्षण के लिए किसी बाहरी व्यक्ति की नियुक्ति नहीं की जाती। बड़ी कक्षाओं के बच्चे ही छोटी कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाते हैं।

संदर्भ

1. सबके लिए शिक्षा आकलन (वर्ष 2000) मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली।
2. अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में शिक्षा का विकास–रिपोर्ट, राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली।
3. भारत–2006 (वार्षिक संदर्भ ग्रंथ) प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2006
4. भारत की जनगणना–2011, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2012
5. शर्मा, राकेश : भारत में महिला साक्षरता–एक परिदृश्य (लेख), प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, 2007
6. पलीवाल, सुभाषिणी : भारत में महिला शिक्षा और साक्षरता कल्याणी शिक्षा परिषद्, दिल्ली
7. पांथरी, प्रो. शैलेंद्र व सिंह, डॉ. अमरेंद्र प्रतातः आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास, मिश्रा ट्रेडिंग कारपो रेशन, वाराणसी, 2000